रामानुज के ईश्वर विचार की व्याख्या करें?

ईश्वर का स्वरूप पंचविध है - पराविभूति; चार प्रकार के व्यूह; वासुदेव, संकर्षण, प्रद्युम्न और अनिरुद्ध; विभव, अन्तर्यामी और अर्चावतार। पराविभूति कालातीत और अनन्त आनन्दमय है नित्य मुक्त जीव उसका भोग करते हैं। ईश्वर जगत् की सृष्टि, पालन और संहार के लिए, बन्धन में पड़े हुए जीवों की रक्षा के लिए और भक्तों पर अनुग्रह करने के लिए वासुदेव, संकर्षण, प्रद्युम्न और अनिरुद्ध (चतुर्व्यूह) के रूप में अभिव्यक्त होता है। वासुदेव छः ऐश्वर्य गुणों से युक्त है। संकर्षण ज्ञान और बल से युक्त है और जीवों का अधिष्ठाता है। प्रद्युम्न नियामक शक्ति और वीर्य से युक्त है और मनस् का अधिष्ठाता है। अनिरुद्ध शक्ति और आत्मनिर्भरता से युक्त है और अहंकार का अधिष्ठाता है। संकर्षण जीवों को प्रकृति से अलग करता है और वेदों को व्यक्त करता है। प्रद्युम्न धर्म का उपदेष्टा और शुद्ध सृष्टि का कर्ता है।

अनिरुद्ध सम्यक् ज्ञान का

द्वाता है, काल का कर्ता है और मिश्रित सृष्टि का कर्ता है। वह जगत का पालक है। प्रद्युम्न जगत् का संहार करनेवाला है। विभव प्रधान या गौण होते हैं। प्रधान विभव ईश्वर के लोकोत्तर शरीर हैं। वे सब मुमुक्षुओं के द्वारा पूजे जाते हैं। व्यास, अर्जुन इत्यादि गौण विभव हैं। मुमुक्षुओं को इनकी उपासना नही करनी चाहिए, क्योंकि ये अहंकार से युक्त जीवों के अधिष्ठाता हैं। ये मनुष्य, पशु और जड़ वस्तुओं में ईश्वर की अभि-व्यक्तियाँ हैं। अवतार धर्म की रक्षा, अधर्म का नाश और नैतिक व्यवस्था को कायम रखने के लिए होते हैं। ईश्वर, चेतन जीवों और जड़ पदार्थों के भीतर प्रवेश करके उनको नियमित करता है। मूर्ति इत्यादि उपास्य चीजों के अन्दर ईश्वर का रहना अर्चावतार है, इससे ईश्वर के प्रति अनुराग होता है।

रामानुज ने ब्रह्म की दो अवस्थाओं का उल्लेख किया है — कारण अवस्था तथा कार्य अवस्था। कारण अवस्था में ब्रह्म में तीन तत्व रहते हैं — चित्, अचित् और ईश्वर। ईश्वर चित् और अचित् का नियामक है। कारण अवस्था में चित् और अचित् तत्व ब्रह्म में सूक्ष्म रूप में विद्यमान रहते हैं। जब ब्रह्म के चित् और अचित्

अंश स्थूल रूप में आकार ग्रहण करते हैं तो क्रमशः चेतन शरीरधारी जीव और जड़ जगत् (प्रकृति) की उत्पत्ति होती है, यही ब्रह्म की कार्य अवस्था है। अन्य शब्दों में स्थूल चित् और स्थूल अचित् से विशिष्ट ब्रह्म ही इस जगत् का कार्य ब्रह्म है। इस प्रकार रामानुज का ब्रह्म तीन तत्वों की समष्टि है। ब्रह्म इन तीन तत्वों से प्रलयावस्था एवं सृष्टि अवस्था में विशेषता रहता है। प्रलयावस्था में ब्रह्म चित् अचित् और ईश्वर से विशेषित रहता है जबकि सृष्टि अवस्था में ब्रह्म चेतन शरीरधारी जीव तथा जड़ प्रकृति तथा ईश्वर से विशेषित रहता है। ब्रह्म के अंशों से उत्पन्न होने के कारण यह जगत सत् है। इसे ही ब्रह्म परिणामवाद कहा जाता है।

Teacher's Signature